sanskrit 8 class book solution | सदाचार

पाठ 12 – सदाचार

सदाचार
(आदर्श दिनचर्या का प्रकाशन)
[जीवन में सदाचार ....ग्रन्थों से किया गया है ।] **SabDekho.in**

1. नापृष्टः .....जडवल्लोकमाचरेत् ।

अर्थ – बिना पूछे किसी से नहीं बोलना चाहिए और यदि किसी के द्वारा जबरदस्ती पूछा जा रहा हो तो मेधावी लोग जानते हुए में भी मूर्ख के तरह संसार में आचरण करते हुए चुप रहें ।

2. अभिवादन शीलस्य .....यशो बलम्।।

अर्थ – अभिवादन करने का स्वभाव रखने वाले का और बड़े – बुजुर्गों (वृद्ध लोगों) की सेवा करने वालों का चार चीज बढ़ते हैं — आयु , विद्या , यश और बल ।

3. वित्तं बन्धुर्वयः..... यदुत्तरम् ॥

अर्थ – धन , बान्धव , उम्र , कर्म और विद्या ये पाँच मान पाने की चीजें हैं । इनमें से हरेक के बाद जो दूसरे हैं वे श्रेष्ठ हैं । अर्थात् विद्या मापे पाने का सर्वश्रेष्ठ साधन है ।

4. बाहो मुहूर्ते.....भवेत।।

अर्थ – आयु और स्वास्थ्य रक्षा के लिए ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए । शरीर की चिन्ता करते हुए नित्य क्रिया का सम्पादन करना चाहिए ।

5. आचार्यश्च पिता चैव .....कल्याणकामिना ।

अर्थ – कल्याण चाहने वाले लोग अपने को विवश जानकर भी आचार्य (गुरु) , पिता , माता , भाई और अन्य बड़े लोगों का अपमान नहीं करें ।

6. विषादप्यमृतं ..... काञ्चनम् ॥

अर्थ – विष से अमृत को प्राप्त हो , छोटा बच्चा से सुभाषित (अच्छे वचन) मिले , शत्रु से भी अच्छा आचरण की सीख मिले तथा अपवित्र स्थान या अपवित्र व्यक्ति से भी सोना मिले तो ग्रहण कर लेना चाहिए ।

7. सर्वलक्षणहीनोऽपि .....जीवति ।।

अर्थ — सभी शुभ लक्षणों से हीन होकर भी जो व्यक्ति सदाचारवान है , श्रद्धावान है और ईर्ष्या रहित है वह व्यक्ति सौ वर्षों तक जीवित रहता है ।

8. सर्वेषामेव .....शुचिः ॥

https://www.evidyarthi.in/

अर्थ – सभी प्रकार के पवित्रताओं में धन की पवित्रता को श्रेष्ठ कहा गया है जो धन पक्ष में पवित्र है वही पवित्र है । मिट्टी पानी से बार – बार शुद्ध करने से कोई शुद्ध (पवित्र) नहीं होता है ।

शब्दार्थ –

नापृष्टः (न + अपृष्टः) = बिना पूछे नहीं ।कस्यचित् = किसी का/ के/ की । ब्रूयात् = बोलना चाहिए । चान्यायेन (च + अन्यायेन) = और अन्याय / जबरदस्ती से । पृच्छतः = पूछते हुए का । जानन्नपि (जानन् + अपि) = जानता हुआ भी । जडवल्लोकमाचरेत् = मूर्ख की तरह संसार में आचरण करना चाहिए । अभिवादनशीलस्य = अभिवादन करने वाले का । वृद्धोपसेविनः (वृद्ध + उपसेविनः) = बूढ़ों की सेवा करने वालों का / की / के । वर्धन्ते = बढ़ते हैं । वयः = उम्र । वित्तं = धन । मान्यस्थानानि = आदरणीय , सम्मान के पात्र । गरीयो (गरीयः) = श्रेष्ठ , बढ़कर । यदुत्तरम् (यत् + उत्तरम्) = जो उत्तर । ब्राह्मे = ब्रह्मवेला में , सूर्योदय से पूर्व के समय में । मुहूर्ते = वेला में , 1 मुहूर्त = 24 मिनट । बुध्येत = जागना चाहिए । रक्षार्थमायुषः = आयु की रक्षा के लिए । निर्वयं = पूरा करके / सम्पन्न करके । कृतनित्यक्रियो = जिसने नित्य क्रिया कर हो (ऐसा व्यक्ति) । आचार्यः = गुरु , शिक्षक । नार्तेनाप्यवमन्तव्याः (न + आतेन + अपि + अवमन्तव्याः) = आर्त (विवश / बेचैन / पीडित) होकर भी अपमान नहीं करना चाहिए । पुंसा = व्यक्ति द्वारा । कल्याणकामिना = कल्याण चाहने वाला । विषादष्यमृतम् (विषात् + अपि + अमृतम्) = जहर से भी अमृत । ग्राह्यम् = ग्रहण करना चाहिए , लेना चाहिए । बालादपि (बालात् + अपि) = बच्चे से भी । सुभाषितम् = अच्छे वचन । अमित्रादपि (अमित्रात् + अपि) = शत्रु से भी । काञ्चनम् = सोना , स्वर्ण को । यः = जो । सर्वलक्षणहीनोऽपि = सभी लक्षणों से हीन भी । सदाचारवान् = अच्छे आचरण वाला । अनसूयश्च अन् + असूयः + च) = और ईर्ष्यारहित / डाह न करनेवाला । शौचानामर्थशौचम् (शौचानाम् + अर्थशौचम्) = पवित्रताओं में धन की पवित्रता । स्मृतम् = कहा गया है । शुचिः = निश्चय ही । मृद्वारि = मिट्टी एवं जल । सद्वृत्तम् = अच्छा व्यवहार । अमेध्यादपि = अपवित्र से भी । काञ्चनम् = सोना (स्वर्ण) को ।

व्याकरणम्

नापृष्टः = न + अपृष्टः (दीर्घ सन्धि) ।
चान्यायेन = च + अन्यायेन (दीर्घ सन्धि) । (व्यंजन सन्धि) ।
वृद्धोपसेविनः = वृद्ध + उपसेविन : (गुण सन्धि) । आयर्विद्या = आयु : + विद्या (विसर्ग संधि)
यदुत्तरम्=यत्+ उत्तरम् (व्यञ्जन सन्धि) । रक्षार्थमायुषः = रक्षा + अर्थम् + आयुषः (दीर्घ सन्धि) ।
आचार्यश्च =आचार्यः + च (विसर्ग सन्धि) । नार्तेनाम्यवमन्तव्याः = न + आर्तेन + अपि + अवमन्तव्याः (दीर्घ सन्धि , यण सन्धि) । विषादप्यमृतम् = विषात् + अपि + अमृतम् (व्यंजन संधि , यण सन्धि) ।
बालादपि = बालात् + अपि (व्यञ्जन – सन्धि) । सद्वृत्तममेध्यादपि = (सत् + वृत्तम् । + अपि) (व्यजन सन्धि) ।
सदाचारवान् = सत् + आचारवान् (व्यञ्जन सन्धि) । अनसूयश्च = अन् + असूय : + च (विसर्ग सन्धि) ।
शौचानामर्थशौचम् = शौचानाम् + अर्थशौचम् ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभागः

ब्रूयात् =√ ब्रून् विधिलिङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
पृच्छतः=√ प्रच्छ + शतृ , पञ्चमी / षष्ठी , एकवचन आचरेत्= आ + √चर विधिलिङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
वर्धन्ते = √वृध् लट्लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन बुध्येत = √बुध विधिलिङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
निर्वर्त्य = निर् +√वृत + ल्यप्
ग्राह्यम्=√ ग्रह + ण्यत् नपुंसकलिङ्ग , एकवचन
जानन्=√ज्ञा + शतृ

https://www.evidyarthi.in/

श्रद्धावान् =श्रद्धा + मतुप
स्मृतम् =√स्मृ + क्त , नपुंसकलिङ्ग , एकवचन
अवमनतव्याः=अव + √मन् + तव्यत् स्वी . / पुं . बहुवचन
आचारवान्=आ+√चर् + क्तवतु

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/